ऋषि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

(देवस्थान विभाग पंजी. क्र. : 6/2011/जालोर, स्थापना वर्ष - वि.सं. २०६० सन् 2003)

वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान, वेद विज्ञान मन्दिर

भागल भीम, भीनमाल - 343029, जिला - जालोर (राजस्थान)

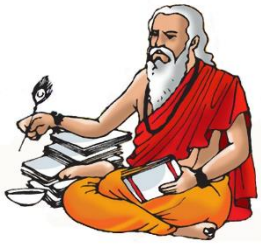

महर्षि ऐतरेय महीदास

पत्रांक : **तिथि :** प्रथम आश्विन शु. प्रतिपदा २०७७ **दिनांक :** 18/09/2020

प्रमुख एवं आचार्य

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

न्यास के पाँच अभियान

1. वेद रक्षा अभियान

वैदिक तथा आधुनिक विज्ञान पर गम्भीर शोध से वर्तमान विज्ञान को नयी दिशा देना। विश्व में वेदों की वैज्ञानिकता प्रतिपादित कर एवं वेद को समस्त मानव जाति का धर्म ग्रन्थ सिद्ध कर समस्त विश्व में वेद को प्रतिष्ठित करना।

2. गौ-कृषि-पर्यावरण रक्षा अभियान

गौ-विज्ञान के प्रति जन चेतना जगाना। कृषि में जैव खाद, जैव ऊर्जा के प्रति जन जागरण, जल संरक्षण, प्राकृतिक, यौगिक व आयुर्वेदिक चिकित्सा से आरोग्य क्रान्ति, यज्ञ (हवन) द्वारा पर्यावरण रक्षा क्रान्ति।

3. राष्ट्र रक्षा अभियान

राष्ट्रियता की भावनाओं का प्रचार-प्रसार, कर्तव्यपरायणता एवं राष्ट्रिय अखण्डता एवं एकता के प्रति भारतीयों में क्रान्ति भाव जगाना।

4. समाज सुधार अभियान

सामाजिक दुरितों यथा जातिवाद, साम्प्रदा-यिकता, छुआछूत, अशिक्षा, नशाखोरी, अन्धविश्वास आदि का निराकरण तथा मानवीयता का सच्चा भाव जगाना।

5. आर्य युवा चरित्र निर्माण अभियान

युवा पीढ़ी को देशभक्त, सच्चरित्र, बलवान्, कर्तव्यनिष्ठ एवं धर्मात्मा बनाना।

9829148400@upi

नोट- न्यास को दिया गया दान

/vaidicphysics

माननीय प्रधानमन्त्री महोदय की सेवा में सार्वजनिक निवेदन

सेवायाम्

माननीय श्रीमान् नरेन्द्र जी मोदी
प्रधानमन्त्री, भारत सरकार
नई दिल्ली

विषय - कोरोना, आत्मनिर्भरता व चीन-संकट।

महोदय!

उपर्युक्त विषयान्तर्गत अति विनम्र निवेदन है कि दीर्घकालोपरान्त हमारे देश को आपके जैसा कठोर पुरुषार्थी व दृढ़संकल्प वाला प्रधानमन्त्री मिला है, यह देश के लिए सौभाग्य की बात है। कोरोना तथा चीन संकट के समय में आपने देश का आह्वान किया था, कि देश को आत्मनिर्भर बनाना है। इस दिशा में आपने चीनी सामान एवं अनेक ऐप्स को देश में प्रतिबन्धित करके निश्चित ही दृढ़ता का परिचय दिया, आप विश्व के एक शक्तिशाली व लोकप्रिय नेता के रूप में उभरे हैं। आपने अनेक ऐतिहासिक कार्य आपने किए हैं - धारा 370 हटाया, तीन तलाक प्रतिबन्ध, श्रीराम मन्दिर के लिए अनुकूल वातावरण बनाना आदि। **इधर देश व विश्व में कोरोना की चर्चा सर्वप्रमुख है, चीन संकट बन कर सीमा पर खड़ा है, उद्योग, व्यापार ठप हैं, युवक बेरोजगार दीन हीन बन चुके हैं। ऐसे समय में प्राथमिकता क्या हो? यह विचारना सर्वोपरि कर्त्तव्य है।** जब देश संकट में हो, तब राष्ट्र के प्रत्येक जागरूक प्रबुद्ध नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह देश को इस संकट से बचाने के उपायों पर चिन्तन करे तथा अपने देश की सरकार को अपने विचारों से अगवत कराए, इसके साथ ही सरकारी अधिकारियों का भी कर्त्तव्य है कि वे उन विचारों पर बिना किसी पूर्वाग्रह के निष्पक्ष दृष्टि से विचार करके आपको अवगत कराएं।

इसी क्रम में मैं अपने विचार निम्नानुसार आपकी तथा राष्ट्र के जागरूक प्रबुद्ध नागरिकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ-

'हे मनुष्य! तू सौ हाथों से कमा व हजार हाथों से दान कर।' (अथर्ववेद)

चीन संकट

इस पर आपकी दृढ़ता व प्रयास हम सबको गौरवान्वित करने वाले हैं। हाँ, एक निवेदन यह अवश्य है कि भारत में बैठे कुछ लोग, जो प्राय: चीन व पाकिस्तान की ही वकालत करते हैं, उनके निरन्तर जारी दुष्प्रचार को लोकतन्त्र का अंग मानकर सहना, राष्ट्रहित में कदापि उचित नहीं है। युद्धकाल में ऐसे लोग भारत को गुप्त रूप से बहुत हानि पहुंचा सकते हैं। वे चीन के लिए जासूसी भी कर सकते हैं। इनमें जो जितना बड़ा होगा, वह उतना ही अधिक राष्ट्र की हानि कर सकता है। अत: ऐसे लोगों को नजरबन्द करके उनकी गुप्त जाँच होनी चाहिए और कोई भी अपराध सिद्ध होने पर कठोर दण्ड देना चाहिए। इस समय ऐसा प्रतीत हो रहा है कि युद्ध अवश्यम्भावी है, ऐसे में केवल इसे जीतना ही लक्ष्य होना चाहिए। युद्ध बड़ी से बड़ी अर्थव्यवस्थाओं वाले देश की अर्थव्यवस्था को नष्ट कर सकता है, तब कोरोना के कारण जो आर्थिक दुर्दशा हुई है, उस स्थिति में युद्ध बड़ा ही विनाशक होगा। **इस कारण लॉकडाउन को देश से पूर्ण समाप्त करके अर्थव्यवस्था का पटरी पर लाना अनिवार्यता है, दूसरा कोई विकल्प नहीं है।**

कोराना

आजकल इसका देश में चीन संकट से भी बड़ा भय प्रचारित किया जा रहा है। आपके वक्तव्यों तथा मीडिया के माध्यम से सर्वत्र ही प्रचारित किया जाता रहा है कि कोरोना से बड़ी कोई भी आज विश्व में समस्या नहीं है, इसके साथ यह भी प्रचारित किया जा रहा है कि सरकार कड़े कदम नहीं उठाती, तो लाखों की जान जा सकती थीं। मैं इस विषय में आपकी संवेदनशीलता, सक्रियता, अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न करके रात-दिन देश के नागरिकों के स्वास्थ्य की चिन्ता करने की आपकी प्रवृत्ति की, प्रशंसा जितनी की जाए, उतनी कम है। आप टी.वी. चैनलों पर शरीर से कुछ दुर्बल भी दिखाई देने लगे थे, यह सब आपकी महानता है परन्तु मुझे फिर भी यह प्रतीत हो रहा है कि हमारा इतना विशाल देश WHO, जिसको अमेरिका भी चीन का पिटठू कहता रहा है और उससे अपना सम्बन्ध भी विच्छेद कर लिया है, का पूरी तरह दास बन गया है। जिस चीन देश ने विश्व में इस रोग को फैलाया, ऐसे अनेक समाचार हम सुनते रहे हैं, उस चीन देश के प्रभाव में कार्य करने वाला WHO क्या हमारे हित की सलाह भी दे सकता है? यह अत्यन्त विचारणीय बात है। WHO के दिशा निर्देशों के अनुसार विश्व के सभी देशों ने स्वयं को चलाया परन्तु सभी देशों में मृत्युदर एवं संक्रमण दर भिन्न-2 देखी जाती रही है। मैं आपकी सेवा में कुछ प्रश्नों के रूप में निवेदन करना चाह रहा हूँ-

१. हमने इस रोग से बचाव व उपचार के लिए केवल अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति को ही क्यों प्रामाणिक माना? जबकि इस पद्धति का विश्व का कोई भी चिकित्सक इस रोग की औषधि खोजने का दावा नहीं करता।
२. भारत का कोई बड़ा राजनेता, उद्योगपति वा अधिकारी अस्वस्थ होने पर चिकित्सा के लिए प्राय: अमेरिका आदि देशों में ही जाता है, क्यों उसे भारतीय चिकित्सकों पर विश्वास नहीं है? अमेरिका एवं यूरोप आदि देशों में अंग्रेजी चिकित्सा की अति उच्च व्यवस्थाएं उपलब्ध

हैं, ऐसी स्थिति में भी वहाँ कोरोना से हुई मृत्यु दर भारत से अधिक है, तब हम कैसे मान सकते हैं कि भारत में लॉकडाउन एवं अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति से ही मृत्यु दर कम रही है? क्या इसके अन्य कारण नहीं हो सकते?

३. क्या इस बात पर गम्भीर विचार नहीं होना चाहिए कि यूरोप एवं अमेरिका आदि देशों में मांसाहार, मदिरा सेवन, स्वेच्छाचारिता, बासा पैक्ड एवं ठण्डा भोजन, अण्डा-मछली-मांस, अन्य अनेक विलासिता के साधन एवं ऐ.सी. का अधिकतम प्रयोग के कारण संक्रमण एवं मृत्युदर भारत से अधिक रही है, क्योंकि हम कितना ही प्रयत्न करें, उनसे अच्छी चिकित्सा सुविधा एवं कानून का शक्ति से पालन कभी नहीं कर सकते। इस कारण हमारे यहाँ मृत्युदर में कमी का कारण निश्चित ही यहाँ की जीवन शैली, खान-पान एवं जलवायु है। दूसरा कारण यह है कि भय के कारण भारत में अधिकांश व्यक्ति तुलसी, गिलोय, काली मिर्च, सौंठ आदि के काढ़े का स्वत: ही प्रयोग करने लगे हैं। सरकारी अंग्रेजी चिकित्सा पर तो व्यर्थ ही धन व्यय हो रहा है। यदि रोगी प्रारम्भ से ही अपने घर पर रहकर स्वतन्त्रता से चिकित्सा करवाते, तो राष्ट्र का अरबों रुपयों का धन व्यर्थ न जाता।

४. भारत में पिछले 6-7 महिने में लगभग 82,000 मृत्यु हुई है, इस विषय में मेरा निवेदन यह है कि क्या आप यह जाँच कराएंगे कि इनमें से **ऐसे कितने रोगी थे, जिनकी मृत्यु केवल कोरोना के कारण हुई है। जहाँ तक मैं समझता हूँ ऐसी मृत्यु दर 0.1% से अधिक नहीं होगी** और शेष अर्थात् अधिकांश मृत्यु हृदय रोग, मधुमेह, कैंसर, गुर्दा रोग, टी.बी. या गम्भीर नशा की प्रवृत्ति आदि के कारण हुई है और इनकी मृत्यु का भी एक बहुत बड़ा कारण रोगी को कोरोना के नाम से आतंकित कर देना है। मेरे विचार से गम्भीर रोगियों को भयग्रस्त करके कभी भी स्वस्थ नहीं किया जा सकता। **इस कारण मृत्यु का एक बहुत बड़ा कारण भय ही है।** ऐसा भय आज तक किसी भी रोग से कभी नहीं सुना और देखा गया। पिछले वर्ष इन महीनों में कितनी मृत्यु हुई थीं, उसका भी अध्ययन होना चाहिए।

५. क्या इस बात की भी जाँच नहीं की जानी चाहिए कि कुछ रोगियों की मृत्यु उन अंग्रेजी दवाओं के कारण भी हुई है, जो उस रोगी के लिए आवश्यक नहीं थीं और चिकित्सक रोगियों पर अपनी इच्छा से नाना प्रयोग कर रहे थे।

६. कोरोना की चिकित्सा करते समय आयुर्वेदिक काढ़ा भी दिया जाता है, ऐसा सुना है, तब क्या यह प्रयोग नहीं होना चाहिए था कि रोगियों की अनुमति से कुछ रोगियों की केवल आयुर्वेदिक, हॉम्योपेथी अथवा नैचुरोपेथी से ही चिकित्सा होती।

७. आपने भी कई बार अपने भाषणों में अपील की, कि कोई आयुर्वेदिक जड़ी बूटी की खोज करें, इसे सुनकर अच्छा लगा कि आप स्वदेशी वैदिक पद्धति को महत्व दे रहे हैं परन्तु दु:खद आश्चर्य की बात है कि जिस किसी ने भी आयुर्वेदिक पद्धति से दवा बनाने का दावा किया उसका सभी सरकारों एवं मीडिया ने प्रखर विरोध किया। कुछ तो ऐसे विरोध करते दिखाई दिए, मानो आयुर्वेदिक अविष्कारकर्ता ने कोई बड़ा अपराध कर दिया हो। ऐसे कैसे बनेगा आत्मनिर्भर भारत?

८. क्या इस बात पर कभी शोध करने का विचार भी किया गया कि कोई कोरोना का रोगी, चाहे बिना किसी औषधि के या केवल आहार और प्राणायाम से ठीक नहीं हो सकता है? **डॉ. बिस्वरूप रॉय चौधरी का दावा है कि उन्होंने लगभग 15 हजार रोगियों को केवल D.I.P. डाइट से स्वस्थ किया है। वे तथा डॉ. तरुण कोठारी (M.D.) दोनों ही कोरोना को वैश्विक षड्यंत्र बता रहे हैं। क्या आप इन दोनों ही डॉक्टर्स के दावों की परीक्षा करने का आदेश देंगे एवं सत्य को देश में स्थापित करने की कृपा करेंगे!** मेरा विनम्र निवेदन है कि माननीय डॉ. हर्षवर्धन जी को दो पुस्तकें N.I.C.E. Way to Cure Covid-19 (डॉ. चौधरी) तथा Corona Pandemic Scandal (डॉ. कोठारी) अवश्य पढ़नी चाहिए। मुझे विश्वास है कि देश त्रासदी से उबर जायेगा।

९. 20 मई 1995 के समाचारों के अनुसार WHO ने बताया था कि विश्वभर में केवल संक्रामक रोगों से ही प्रतिदिन 50,000 अर्थात् वर्ष में 1 करोड़ 82 लाख 50 हजार रोगियों की मृत्यु हो जाती है, जबकि इस वर्ष विश्व में अबतक अर्थात् लगभग 6-7 महिने में कोरोना से केवल लगभग सवा 9 लाख रोगियों की मृत्यु हुई है, तब इसको देखकर WHO और भारत सरकार ने ऐसा भय क्यों पैदा किया, जैसे कोई महाप्रलय आ गया हो। क्या यह गम्भीर विचारणीय विषय नहीं है? रोगियों की संख्या अधिक दर्शाने हेतु गम्भीर रोगों को भी कोरोना के खाते में डाला जा रहा है, क्यों? हमने कुछ दिन पूर्व दिल्ली के सर्वे के विषय में पढ़ा कि 54 लाख लोगों में कोरोना वायरस आकर चला गया, किसी को पता भी न चला। न चिकित्सा की, न लक्षण दिखे, तब यह कैसी महामारी? तब क्यों भय का अराजक व्यापार?

१०. रोग पहले भी आए, लाखों-करोड़ों लोगों की मृत्यु भी हुई परन्तु ऐसी अफरा-तफरी और लॉकडाउन कभी नहीं हुआ। यद्यपि संक्रमण रोकने में लॉकडाउन एक प्रभावी कदम है परन्तु क्या यह विचार नहीं किया जाना चाहिए कि लॉकडाउन से करोड़ों श्रमिक और छोटे व्यापारी अपना सब कुछ नष्ट करके आज दीनहीन दरिद्र बन चुके हैं। यद्यपि आपने उनको खाद्यान्न आदि सुविधाएं देने की ऐतिहासिक घोषणा की है और दिया भी जा रहा है परन्तु केवल क्या वे इसी से अपना जीवन निर्वाह कर पाएंगे? फिर यह सब क्यों? कथित महामारी का ऐसा भय? लॉकडाउन, बेरोजगारी, अर्थसंकट एवं चीन से युद्ध, सबको एक साथ देश नहीं सह पायेगा। मान्यवर! लॉकडाउन का एक बार दण्ड चीन ने हमें दे दिया है, अन्य अनेक देशों को भी बर्बाद कर दिया है। यदि भविष्य में ऐसा बार-2 जैविक आक्रमण होता रहा, तो क्या बार-2 देश लॉकडाउन में ही पड़ा रहेगा?

११. जो व्यक्ति अपने घर के अन्दर, विशेषकर महानगरों में रहने वाला व्यक्ति लॉकडाउन के दौरान शुद्ध हवा एवं प्रकाश से भी वंचित रहेगा, वह व्यक्ति क्या अपनी रोग-प्रतिरोग क्षमता को बचा पाएगा?, तब क्या लॉकडाउन हटने के पश्चात् ऐसे व्यक्ति को संक्रमण का खतरा और अधिक नहीं होगा? यही कारण है कि अनलॉक की प्रक्रिया में संक्रमण बढ़ा और फिर से हम कहीं-2 लॉकडाउन करने लगे। अनलॉक के इस चरण की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर तक आप इस पत्र पर कुछ निर्णय लेने की कृपा करेंगे? दैनिक भास्कर 18 सितम्बर 2020

में छपे एक समाचार के अनुसार **नार्वे की एक कम्पनी एयरथिंग्स** के सर्वेक्षण के अनुसार लॉकडाउन से घरों में CO_2 स्तर बढ़ने से विश्व में प्रतिवर्ष 38 लाख मौतें हो सकती हैं। यह तो एक शोध है, अभी संसार और देखेगा कि इन उपायों के क्या-2 दुष्परिणाम आते हैं? अभी मास्क के दुष्परिणाम और विश्व के सामने आयेंगे?

१२. कोरोना के विषय में विश्व कितना भ्रमित रहा, कभी कहा कि केवल छूने से कोरोना होता है, इसलिए जहरीले सेनेटाइजरों का प्रयोग हुआ। उनके दुष्परिणाम भी आए। कभी कहा कि हवा से भी होता है, तब मास्क एक मात्र बचाव का साधन बताया, इस पर भी कुछ समाचार ऐसे आए कि मास्क जानलेवा भी हो सकता है, क्योंकि इससे शरीर में CO_2 बढ़ता है। O_2 का स्तर कम होता है और यह बात निश्चित रूप से सत्य ही होगी। फिर N95 मास्क से कोरोना नहीं रुकता, यह कहा गया, कभी कहा गया कोरोना पैरों से भी फैलता है, कभी आँखों से भी फैलता है, कभी 6 थ्ममज की दूरी रखने का सुझाव दिया, तो कुछ खोजों में 10-20 फीट की दूरी का भी सुझाव दिया, कभी मलमूत्र से कोरोना फैलता है, बताया कभी ऐ.सी. को कोरोना के लिए हानिकारक बताया। इस पर विचारने से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान Medical Science कोरोना के विषय में पूरी तरह भ्रमित है, फिर भी उसी को ही भारत में प्रमाणिक माना जाता है। आयुर्वेदिक आदि पद्धतियों को प्रताड़ित किया जा रहा है। मान्यवर! **यह आपकी देशभक्ति और दूरदर्शिता के अनुकूल नहीं है।**

१३. आज तक जो भी सेनेटाइजर बाजार में आए हैं, क्या वे अत्यन्त विषैले नहीं है? क्या उनसे मानव शरीर को कोई हानि नहीं होगी? क्या इसके स्थान पर आयुर्वेदिक सेनेटाइजर का आविष्कार नहीं हो सकता था और आज जिसने ऐसा किया भी है, क्या उसको अपना उत्पाद बेचने की अनुमति मिलेगी? जब कोरोना हवा से भी फैलता है, तब हवा को शुद्ध करने का आधुनिक विज्ञान के पास क्या उपाय है? यदि कोई हवा को शुद्ध करने की ऐसी मशीन बना ले, जो क्षेत्र विशेष में वायु को वायरस मुक्त कर दे, तो क्या मीडिया और सरकार इसका प्रचार करेंगे? **क्या वायु शुद्ध करने के लिए वैदिक सनातन यज्ञ पद्धति का प्रयोग नहीं करना चाहिए?**

१४. आज भारत का आयुष मन्त्रालय, जो स्वयं स्वास्थ्य मन्त्रालय का मात्र सेवक जैसा बना हुआ है, भी आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा कोरोना की चिकित्सा करने का दावा करने वालों को प्रतिबंधित करता हो, तब तो बाड़ द्वारा फसल खाने की कहावत चरितार्थ हो रही है। यह बहुत लज्जाजनक बात है।

कोरोना से स्वस्थ हुए रोगियों और चिकित्साकर्मियों का जैसा सम्मान देखा गया, वह ऐतिहासिक व हास्यास्पद है। बड़े-2 गम्भीर रोगों से ग्रस्त रोगियों के मृत्यु के मुख से लौटने पर तथा उनके चिकित्सकों, चिकित्सा विज्ञान में अभूतपूर्व आविष्कार करने वालों, कृषि उत्पादन में चमत्कार दिखाने वालों, बड़े-2 धर्मात्मा पुरुषों, युद्ध जितने वाली सेना का भी कभी ऐसा सम्मान नहीं देखा गया, तब यह सब क्या है, मेरी समझ में तो नहीं आया, यह भी वैश्विक षड्यन्त्र का भाग प्रतीत होता

है, ताकि ऐलोपेथी का गौरव बढ़े। दवा उद्योग समृद्ध हो। इस देश में प्रतिवर्ष 10 लाख रोगी तम्बाकू से मरते हैं। 2.6 लाख शराब से, 2.5 लाख मधुमेह से, 4.5 लाख कैंसर से, 4.5 लाख टी.बी. से, 9.5 लाख श्वसन रोग से, 2.5 लाख अस्थमा से, 5 लाख फेफड़ों के संक्रमण से, 7.25 लाख हृदयाघात से, 2.2 लाख गुर्दा रोग से, 7.1 लाख डायरिया से मरते हैं (Corona Pandemic Scandal Page No. 22 एवं अन्य स्रोत) परन्तु इनकी न कोई चर्चा, न कोई भय, न कोई लॉकडाउन, ऐसा क्यों? काश! यदि टी.वी. चैनल, समाचार पत्र, मोबाइल संदेश व सोशल मीडिया के द्वारा नशा मुक्ति का संदेश बार-2 प्रसारित किया जाता, नशा करने पर कठोर दण्ड मिलता, तो सम्पूर्ण देश नशामुक्त हो जाता, परन्तु सरकारों ने ऐसा कभी किया तो क्या, सोचा तक नहीं। क्या नशा से सरकार व कम्पनीज् को धन मिलता है, इस कारण? क्या धन के बदले जनता के प्राण लेना किसी भी सरकार का अधिकार होना चाहिए? यदि देश नशामुक्त होता, तो करोड़ों परिवार बर्बाद होने से बच जाते, अपराधों व दुर्घटनाओं में बहुत कमी आती, क्या आप इस पर कभी विचारेंगे?

मांसाहार, मछली व अण्डा एवं अन्य गलत खान-पान व जीवन शैली से होने वाले रोग- डायबिटीज, हृदय रोग, कैंसर आदि के विरुद्ध विभिन्न माध्यमों से सरकार जनता को सचेत करती, तब इन रोगों को नियन्त्रित किया जा सकता था, परन्तु ऐसा भी नहीं हुआ। लगता है कि नागरिकों को स्वस्थ रखने में किसी भी सरकार की कोई रुचि नहीं रही, बल्कि उसकी आयु बढ़ाने व जीवन भर किसी न किसी रोग से ग्रस्त रखकर डॉक्टर्स, दवा व वैक्सीन कम्पनीज् को धनवान् बनाना ही उद्देश्य रहा है। **ऐसी दवाओं, जिनसे मनुष्य जीवन भर किसी न किसी रोगग्रस्त रहे, सदैव दवाइयाँ खाता रहे, का आविष्कार ही आधुनिक चिकित्सा पद्धति का लक्ष्य है।** इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर ही आयुर्वेदिक, प्राकृतिक, होम्योपेथी आदि को प्रताड़ित करके विदेशी एलोपेथी पद्धति को थोपा जा रहा है। नागरिकों से अपनी इच्छा से चिकित्सा पद्धति चुनने तक का अधिकार छीन लिया गया है। उनके परिवार, समाज सब कोरोना के कृत्रिम भय से उत्पन्न प्रतिबंधों के रहते बिखर कर रह गये हैं। सत्संग, सभाएं, बाजार सब चौपट हो गये हैं। सम्भवतः WHO यह चाहता है कि देश के नागरिक मिलकर कहीं उसे चुनौती न देने लगें, इस कारण समाज व देश को बिखेरे रखना ही उसका उद्देश्य है और आपकी सरकार उसी के निर्देशों का अक्षरशः पालन कर रही है और इसी कार्य के लिए माननीय डॉ. हर्षवर्धन जी को WHO में पद दिया गया है और हम व्यर्थ आत्ममुग्ध हो रहे हैं।

मुझे यह स्पष्ट अनुभव होता है कि विश्व की कुछ अदृश्य साम्राज्यवादी धनी शक्तियाँ अपने लाभ के लिए और कई देशों की अर्थव्यवस्थाओं को नष्ट करने के लिए जानबूझ कर कोरोना का भय पैदा कर रही हैं और करती रहीं है। WHO उन शक्तियों का माध्यम बना हुआ है और हमारे जैसे अनेक देशों की सरकारें WHO की दास बनी हुई हैं। कहाँ है आत्मनिर्भरता? पल-पल पर रूप बदलने वाले आधुनिक विज्ञान ने हमारे सनातन वैदिक भारतीय विज्ञान को पूर्णतः अपना दास बनाकर नष्ट कर दिया है, परन्तु हम आत्ममुग्ध होकर उसी को अपनी प्रगति मान रहे हैं।

मैं एक वैदिक वैज्ञानिक होने के नाते आपकी सेवा में यह भी विनम्र निवेदन करना चाहूँगा

कि जैसे पग-2 पर भूलें करने वाला आधुनिक भौतिक विज्ञान अनेक क्षेत्रों में विश्व को मूर्ख बना रहा है, और इसे मैं विश्व के किसी भी वैज्ञानिक मंच पर सिद्ध कर सकता हूँ, उसी प्रकार आधुनिक मेडिकल सायंस भी संसार को कई क्षेत्रों, विशेषकर वर्तमान में कोरोना के विषय में मूर्ख बनाया जा रहा है, ऐसी मुझे आशंका है।

मान्यवर! आपने देश को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प लिया है, तब आपको अपने देश के सनातन ज्ञान-विज्ञान (वैदिक विज्ञान एवं आयुर्वेद आदि) पर पूर्ण विश्वास करके उस पर प्राथमिकता के साथ अनुसंधान करने को प्रोत्साहन देना चाहिए। विदेशी मुद्रा, विदेशी बुद्धि आदि पर कम से कम आश्रित रहने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि **आत्मनिर्भर वही देश हो सकता है, जिसे अपनी और अपने पूर्वजों की बुद्धि पर पूर्ण विश्वास हो। मुझे ऐसा प्रतीत होता है आज हमारे देश का तन्त्र ऐसे वैदिक विज्ञान को कभी आगे नहीं आने देगा, जो वर्तमान विज्ञान से आगे की बात करने में समर्थ हो, हाँ, उसका अन्धानुगमन करने वाले अवश्य सेवक वा सहायक बन कर रह सकते हैं और कुछ रह भी रहे हैं। इसी प्रकार किसी भी चिकित्सा पद्धति को तभी तक चलने दिया जायेगा, जब तक वह ऐलोपेथी की सेविका वा सहायिका हो, अन्यथा रोक दिया जायेगा। क्या इसे स्वतन्त्र, सम्प्रभु एवं आत्मनिर्भर भारत की पहचान कहूँ?**

मान्यवर! अब क्वाण्टम टेटू की तैयारी चल रही है अर्थात् हर नागरिक के स्वास्थ्य पर दृष्टि रखी जायेगी। 'डिजीटल' शब्द से आज ऐसा प्रेम बढ़ रहा है, जो विश्व को विनष्ट करके रख देगा। **अभी हमारे देश में आपका ट्विटर एकाउण्ट तक सुरक्षित करने की क्षमता नहीं है, तब सभी कुछ डिजीटल, यहाँ तक नागरिकों के शरीर व मन को डिजीटल करने की सनक देश का सर्वनाश कर सकती है। यह तकनीक विश्व के पर्यावरण को तो नष्ट भ्रष्ट करेगी ही, अपितु देश के बैंक, रक्षा, विद्युत्, यातायात आदि सभी तन्त्रों को कोई नियन्त्रित करके देश को गुलाम बना सकता है, तब सेना आदि भी कुछ नहीं कर सकती। हर नागरिक एक विदेशी पालतू पशु बन कर रह जायेगा, ऐसी स्थिति भी आ सकती है। यह ऐसा बारूदी खेल बन सकता है, जिसमें हमारी स्वतन्त्रता कभी भी जल कर भस्म हो सकती है।** क्या मेरी इस आशंका का खण्डन स्वास्थ्य मन्त्रालय करेगा? कृपा करके इस विचार को त्याग दीजिए। हे मान्यवर! ऐसी दुर्दशा तो कभी एक हजार वर्षों की दासता में भी नहीं हुई, कहीं आपके अति उत्साह व असावधानी से कुछ समय पश्चात् किसी दुष्ट एजेंसी वा देश द्वारा ऐसा न हो जाये, तब तो कोई क्रान्ति करने योग्य भी नहीं बच पायेगा।

अन्त में मेरा पुन: करबद्ध निवेदन है कि डॉ. बिस्वरूप रॉय चौधरी एवं डॉ. तरुण कोठारी के दावों की निष्पक्ष परीक्षा करवाने का कष्ट करें। यदि वे गलत हों, तो उन्हें सजा दें, अन्यथा उनकी बात मानकर देश को त्रासदी से बचा लें, अन्यथा अनर्थ हो जायेगा। आपके अतिरिक्त कौन लौहपुरुष है, जिसकी ओर आशा भरी दृष्टि से देख सकें। हाँ, आपके पश्चात् केवल माननीय योगी आदित्यनाथ जी की ओर देश देख रहा है।

उपसंहार

मान्यवर! WHO के अनुसार बहुत चलना हो गया, अब कृपा कर अपने विवेक से चलना प्रारम्भ करें। आर्थिक दुरवस्था बहुत हो गयी, अब इसे रोकें, शिक्षण व्यवस्था को पटरी पर लाना आवश्यक है, वैसे भी विश्व के शीर्ष 300 विश्वविद्यालयों में से सम्भवतः भारत का एक भी नहीं है। यह अति दुर्भाग्यपूर्ण व लज्जाजनक स्थिति है। उद्योग, व्यापार, यातायात एवं धार्मिक कार्यक्रमों आदि को सामान्य करने की कृपा करें। कोरोना के साथ वैसा ही व्यवहार करें, जैसा अन्य रोगों के साथ होता है। बलपूर्वक जाँच, सबको कोविड – सेंटर्स में ले जाकर व्यर्थ धन का अपव्यय नहीं होवे। जो रोगी होगा, वह स्वयं चिकित्सालय जायेगा। गम्भीर रोगों से पीड़ितों को छोड़कर अन्य संक्रमित तो बिना ऐलोपेथी दवा केवल आयुर्वेद व प्राकृतिक चिकित्सा से ठीक हो सकते हैं और कुछ लोग ऐसा कर भी रहे हैं। फिर भारी भरकम व्यय क्यों? कोरोना का प्रचार–चेतावनी आदि से जो भय का वातावरण है और अधिकांश मृत्यु इसी के कारण हो रही हैं, उस कृपा करके रोकने का अनुग्रह करें। कहीं WHO की भी यह चाल तो नहीं कि भारत कोरोना से भयभीत ही रहे, अर्थव्यवस्था चौपट होती रहे, फिर चीन आक्रमण कर दे, तब भारत या तो हार जायेगा अथवा किन्हीं देशों के कर्ज में डूब जायेगा, ये दोनों ही स्थितियाँ भयावह हैं। सभी विद्यालयों, फैक्ट्रीज, कार्यालयों, रेलों, बसों, विमानों आदि में आयुष काढ़ा अनिवार्य रूप से दिया जाये, योग प्राणायाम अनिवार्य होवे। मेरी तो यह सामान्य सलाह है, विशेष तो आप देश के प्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सकों व डॉ. बिस्वरूप रॉय चौधरी, डॉ. तरुण कोठारी आदि का एक बोर्ड बनाकर विवेकसम्मत पद्धति का निर्माण करके विश्व को नयी दिशा देंगे, तो आप तथा देश का महान् यश होगा।

आशा है आप इस इतने लम्बे परन्तु अति महत्वपूर्ण पत्र पर अवश्य विचार करके अपने देशभक्त एवं सनातन संस्कृति के उपासक व्यक्तित्व के अनुरूप ही दूरगामी निर्णय करेंगे?

इसी आशा के साथ

राष्ट्र का एक जागरूक नागरिक

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
आचार्य, वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान